भजन

पिया प्यार तेरा बेशुमार
लबालब प्याले भरे,हमको पिलाये तूने
सुख सागर इसमें कई अपार

1–लाये हैं सागर को गागर में भर,प्यारी निसवत की खातिर
कई कष्ट सहे, दिन और रात जगे
खाई दर दर की ठोकर हजार

2–बिजली गिरे या चलें आंधियां,भटके यहां मालिके दो जहां
इश्के जाम लिये, फिरते हैं वोह सदा
पीछे रूहों के बारह हजार

3–हमने दुष्टाई बहुत है करी,फिर भी न तुमने आह भरी
प्यार करते हैं वो, अपनी रूहों को
बख्शते हैं गुनाह बार बार